## ।। लिङ्गपुराणोक्तं श्रीनृसिंहकृत शरभस्तोत्रम् ।।

## ।। अथ स्तोत्रम।।

**नमो रुद्राय शर्वाय महाग्रासाय विष्णवे। नम उग्राय भीमाय नमः क्रोधाय मन्यवे।।**
**नमो भवाय शर्वाय शङ्कराय शिवाय ते। कालकालाय कालाय महाकालाय मृत्यवे।।**
**वीराय वीरभद्राय क्षयद्वीराय शूलिने। महादेवाय महते पशूनां पतये नमः।।**
**एकाय नीलकण्ठाय श्रीकण्ठाय पिनाकिने। नमोऽनन्ताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्युमन्यवे।।**
**पराय परमेशाय परात्परतराय ते। परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये।।**
**नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भानवे। कैवर्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते।।**
**भैरवाय शरण्याय महाभैरवरूपिणे। नमो नृसिंहसंहर्त्रे कामकालपुरारये।।**
**महापाशौघसंहर्त्रे विष्णुमायान्तकारिणे। त्र्यम्बकाय त्र्यक्षराय शिपिविष्टाय मीढुषे।।**
**मृत्युञ्जयाय शर्वाय सर्वज्ञाय मखारये। मखेशाय वरेण्याय नमस्ते वह्निरूपिणे।।**
**महाघ्राणाय जिह्वाय प्राणापानप्रवर्त्तिने। त्रिगुणाय त्रिशूलाय गुणातीताय योगिने।।**
**संसाराय प्रवाहाय महायन्त्रप्रवर्तिने। नमश्चन्द्राग्निसूर्याय मुक्तिवैचित्र्यहेतवे।।**
**वरदायावताराय सर्वकारणहेतवे। कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।।**
**अमोघायाग्निनेत्राय लकुलीशाय शम्भवे। भिषक्तमाय मुण्डाय दण्डिने योगरूपिणे।।**
**मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः। अव्यक्ताय विशोकाय स्थिराय स्थिरधन्विने।।**
**स्थाणवे कृत्तिवासाय नमः पञ्चार्थहेतवे। वरदायैकपादाय नमश्चन्द्रार्धमौलिने।।**
**नमस्तेऽध्वरराजाय वयसां पतये नमः। योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमेष्ठिने।।**
**सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वेश्वराय ते।**

## ।।स्तोत्र पूर्ण हुआ।।

एकद्वित्रिचतुः पञ्चचकृत्वस्तेऽस्तु नमो नमः।
दशकृत्वस्तु साहस्रकृत्वस्ते च नमो नमः।।
नमोऽपरिमितं कृत्वानन्तकृत्वो नमो नमः।
नमो नमो नमो भूयः पुनर्भूयो नमो नमः।।

**फलश्रुति:**

- जो मनुष्य इस पुण्यप्रद  तथा वेदमय आख्यान को पढता अथवा सुनता है , उसके सभी दुखों का नाश हो जाता है।
- **यह धन की वृद्धि करने वाला, यश देने वाला, आयु प्रदान करने वाला, रोग रहित करने वाला, पुष्टि की वृद्धि करने वाला**, **सभी विघ्नों को शांत करने वाला, सभी व्याधियों को नष्ट करने वाला, अकाल मृत्यु का शमन करने वाला**, **परम शांति प्रदान करने वाला, मंगलकारक**, **शत्रु समूह का दमन करने वाला**, **सभी मानसिक रोगों का विनाश करने वाला**, **बुरे स्वप्नों का निवारण करने वाला, सभी भूत प्रेतों को दूर करने वाला, दुष्ट ग्रहों का क्षय करने वाला, पुत्र पौत्र की वृद्धि करने वाला, योग सिद्धि प्रदान करने वाला, भली भांति शिवज्ञान को प्रकाशित करने वाला, शेषलोक का सोपान स्वरुप, वंचित फलों की सिद्धि करने वाला, विष्णु माया को दूर करने वाला, देवताओं के परमार्थ को देने वाला**, वांछा की सिद्धि प्रदान करने वाला और रिद्धि प्रज्ञा आदि देने वाला है।
- **चोर, बाघ, सिंह, सर्प आदि का भय होने पर, राजा से भय होने पर, इस लोक में अन्य उत्पात (भूकंप, दावाग्नि, धूलवृष्टि) होने पर, उल्कापात होने पर, तेज हवा चलने पर, अनावृष्टि होने पर, अतिवृष्टि होने पर इस स्तोत्र को पढ़ना चाहिए।**
- जो इस सर्वोत्तम स्तोत्र को पढता अथवा सुनता है वह रुद्रत्व प्राप्त करके रुद्र का अनुचर हो जाता है।
- नृसिंह बाधा एवम् अन्य संबंधित आवेशों के निवारण के लिए विशेष रूप से यह स्तोत्र लाभकारी है।

**सिद्धि विधान:**

- यह स्तोत्र 1000 पाठ करने से सिद्ध होता है। विशेष सिद्धि के लिए 10,000 पाठ करें।
- पाठ आरंभ किसी भी शुभ दिन–(शिवरात्रि, त्रयोदशी, चतुर्दशी, अष्टमी) अथवा शिव के किसी भी उत्सव में करें।
- शिव प्रतिष्ठा के अवसर पर शिव का सानिध्य प्रदान करने वाले इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।
- यह अत्यन्त उग्र साधना है, भगवान शिव के घोर (उग्रतम) स्वरूप का ध्यान किया गया है, बिना कवच सिद्ध किए यह साधना न करें।

---

**स्वामी रुपेश्वरानंद जी द्वारा संशोधित**

---

**स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम**
**बलुआ , जिला - चंदौली ( उत्तर प्रदेश )**

---

**Mobile No. : 7607 233 230**
**https://swamirupeshwaranand.in/**